दिसंबर १९९२ हिंदी पत्रिका में प्रकाशित

धम्मवाणी

महा कारुणिको नाथो, हिताय सब्ब पाणिनं।
पूरेत्वा पारमी सब्बा, पत्तो सम्बोधिमुत्तमं॥

सब प्राणियों के हित-सुख के लिए, समस्त पारमिताओं को परिपूर्ण कर, महाकारुणिक भगवान ने उत्तम सम्बोधि प्राप्त की।

– पुब्बाण सुत्तं - १४.

ऐसे थे भगवान् बुद्ध!

ब्रह्मायु धन्य हुआ!

अपने शिष्य उत्तरमाणवक द्वारा भगवान् बुद्ध की उत्तम चर्या का वर्णन सुन ब्रह्मायु के मन में जो श्रद्धा जागी उसके साथ-साथ ऐसी धर्म-कामना भी जागी – "क्या कभी उन आप गोतम के साथ मेरी भेंट हो सकेगी? क्या कभी उनसे वार्तालाप करने का सौभाग्य प्राप्त हो सकेगा?"

मानो भगवान् ने उसकी मनोकामना जान ली और उसे पूरा करने के लिए वैदेही जनपद की क्रमशः चारिका करते हुए मिथिला आ पहुँचे। साथ पांच सौ भिक्षुओं का संघ था। मिथिला में भगवान् भिक्षु संघ सहित मक्खादेव नामक आम्रवन में ठहरे। मिथिला नगर निवासियों को पता चला तो समूह के समूह भगवान से मिलने आये। अनेक ब्राह्मण भी गये। उनमें से कोई-कोई भगवान् को अभिवादन कर एक ओर बैठ गये। कोई-कोई चुपचाप ही एक ओर जा बैठे।

जब ब्रह्मायु ने सुना कि भगवान् पधारे हैं तो वह भी अपने अनेक माणवों को साथ ले मक्खादेव आम्रवन की ओर चला। आम्रवन के समीप पहुँच कर उसने अपने एक शिष्य के द्वारा भगवान् को यह सूचना भिजवाई– "सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का ज्ञाता १२० वर्षीय वयोवृद्ध ब्रह्मायु ब्राह्मण आया है। आपकी कुशल मंगल पूछता है और आपसे मिलने की आज्ञा चाहता है। मिथिला में जितने ब्राह्मण हैं, ब्रह्मायु उन सब में संसारिक सुख-भोग में भी अग्र है, वैदिक मंत्र ज्ञान में भी अग्र है, आयु में भी अग्र है और यश-कीर्ति में भी अग्र है।"

भगवान् ने मिलने की अनुमति दी। ब्रह्मायु जहां भगवान् थे वहां गया। भगवान् के सामने जो ब्राह्मण परिषद् बैठी थी उसने देखा कि प्रसिद्ध, यशस्वी, ब्राह्मणों में अग्र ब्रह्मायु भगवान् से मिलने आया है। उन सब के मन में ब्रह्मायु के प्रति बहुत आदर भाव था। वह एकान्त में भगवान् से वार्तालाप कर सके इसका अवकाश देने के लिए पहले आये हुए ब्राह्मण उठने लगे। ब्रह्मायु ने उन्हें रोका, अपने-अपने स्थान पर बैठे रहने के लिए कहा और स्वयं भगवान् से कुशल मंगल पूछ कर उनके समीप जा बैठा।

उसके शिष्य उत्तरमाणवक ने भगवान के शरीर के बत्तीस महापुरुष लक्षण बड़े ध्यान से देखे थे। फिर भी ब्रह्मायु के मन में आया कि बत्तीस लक्षण सामान्य लोगों के शरीर में नहीं होते हैं। किसी महापुरुष के शरीर में ही होते हैं जिनका संसार में आविर्भाव बहुत दुर्लभ होता है। ऐसे महापुरुषों का दर्शन अच्छा होता है। अतः वह एक-एक करके भगवान् के शरीर के महापुरुष लक्षण देखने लगा। उन दिनों के वैदिक शास्त्रों के अनुसार महापुरुष के बत्तीस शरीर-लक्षण इस प्रकार गिनाये गये थे; –

[१] **सुप्रतिष्ठित पाद** – याने पांव के तलवे समतल होते हैं। उनमें खड्डे नहीं होते जिससे पांव जमीन पर समतल रखे जाते हैं।

[२] **चक्र वरंकित** – पैरों के दोनों तलवों में चक्र अंकित होते हैं जो नाभि, नेमि तथा सहस्त्र आरों से सर्वाकार परिपूर्ण होते हैं।

[३] **आयत पार्ष्णि** – पांव की एड़ियां सामान्य जन के मुकाबले लम्बी और चौड़ी होती हैं।

[४] **दीर्घ अंगुल** – हाथ और पांव की अंगुलियां लम्बी होती हैं।

[५] **मृदु तरुण हस्त-पाद** – हाथ और पांव रूखे और कड़े नहीं होते। मृदुल और तरुण होते हैं।

[६] **जाल हस्त-पाद** – हाथ और पांव की अंगुलियों के बीच थोड़ी सी दूर में ऐसी जालनुमा त्वचा होती है जैसी कि हंस, बतख आदि के पंजों में होती हैं जिससे दो अँगुलियों के बीच कोई विवर नहीं रहता।

[७] **उस्संख पाद** – पांव के टखने सामान्य जन के मुकाबले जरा ऊपर स्थित होते हैं।

[८] **एणी जंघ** – एणी मृग की सी जांघें होती हैं।

[९] **आजानुभुज** – खड़े होने पर बिना झुके अपने दोनों हाथों की हथेलियों से दोनों घुटने मसल पाते हैं, थपथपा पाते हैं।

[१०] **कोषाच्छादित वास्तिगुह्य** – पुरुषेन्द्रिय त्वचा कोष में गुप्त, गुम्फित रहती है।

[११] **सुवर्ण वर्ण** – सारा शरीर कंचनवर्णीय होता है।

[१२] **सूक्ष्म छवि** – शरीर की चमड़ी पर एक सूक्ष्म त्वचा मढ़ी होती है जिस पर धूल आदि नहीं लिपट पाती।

[१३] **एकैक लोम** – प्रत्येक लोम कूप में एक-एक लोम होता है।

[१४] **ऊर्ध्वाग्र लोम** – सभी लोम नीले अंजन वर्णी होते हैं तथा बायें से दाहिनी ओर कुण्डलित होकर उनके सिरे ऊपर की ओर स्थित होते हैं।

[१५] **ब्राह्मऋजुगात्र** – शरीर लम्बा और अकुटिल याने सीधा होता है।

[१६] **सप्त उत्सद्** – दोनों हाथ, दोनों पांव, सामने और पीछे की धड़ और चेहरे सहित मस्तिष्क – शरीर के ये सातों अंग विशाल और पूर्ण आकार वाले होते हैं।

[१७] **सिंह-पूर्वार्द्ध-काय** – छाती सहित काया का ऊपरी भाग सिंह का सा होता है।

[१८] **चितान्तरांस** – दोनों कन्धों के बीच का भाग भरा-पूरा होता है।

[१९] **न्यग्रोध परिमण्डल** –जैसे न्यग्रोध वृक्ष जितना ऊंचाई में बढ़ता है उतना ही चौड़ाई में फैलता है। वैसे ही खड़े होकर दोनों हाथ बाजू में फैला देने से जो व्याम याने चौड़ाई का माप होता है वही सिर से पांव तक का माप होता है।

[२०] **समवर्त स्कन्ध** – समान गोलाकार कन्धे।

[२१] **रसग्ग सग्गी** – अत्यन्त कोमल बाल।

[२२] **सिंह हनु** – सिंह की सी चौड़ी ठोडी।

[२३] **चव्वालीस दन्त** – चालीस दांत।

[२४] **समदन्त** –दांत आगे पीछे न होकर समान पंक्तिबद्ध होते हैं।

[२५] **अविवर दन्त** –दांतों के बीच विवर याने छेद नहीं होते।

[२६] **सुशुक्ल दाढ** – खूब सफेद दाढ।

[२७] **प्रभूत जिव्ह** – बहुत लम्बी जीभ।

[२८] **ब्रह्म स्वर** – करविंक पक्षी का सा निन्नादी स्वर।

[२९] **अभिनील नेत्र** – अलसी के फूल जैसी नीली आंखें।

[३०] **गो पक्ष्म** –गाय की सी बरौनियां याने पलकों के बाल।

[३१] **श्वेत ऊर्णा** –दोनों भौहों के बीच कोमल, श्वेत, कपास की सी वर्तुलाकार रोमावली।

[३२] **उष्णीष शीर्ष** –सिर के ऊपर बीचों-बीच उठा हुआ एक उपशीष जो देखने में यों लगे जैसे सिर पर जटामुकुट या पगड़ी सी बांध रखी हो।

शास्त्र-निष्णात, ब्राह्मण-प्रमुख ब्रह्मायु ने एक-एक करके भगवान् के तीस महापुरुष लक्षण जांचे परन्तु दो को नहीं जांच सका –एक तो दीर्घ जिव्हा और दूसरी गुम्फित पुरुषेन्द्रिय। उसके अनुरोध पर भगवान ने अपनी जीभ बाहर निकाली, जिसे ऊंची करने पर सारा नाक और ललाट ढक गया और बाजू की ओर ले जाने पर एक-एक करके दोनों कानों को छू लिया गया। तदनन्तर भगवान् ने उससे आश्वासन भरे शब्दों में कहा –

ये ते द्वत्तिंसा ति, सुता महापुरिसलक्खणा।
सब्बे ते मम कायस्मिं, मा ते कङ्खाहु ब्राह्मण॥

हे ब्राह्मण! जो तूने बत्तीस महापुरुष लक्षण सुने हैं, ये सब मेरे शरीर में हैं। तुम्हें इस बारे में काई सन्देह नहीं हो।

शरीर के यह लक्षण पूर्वकृत पुण्यों के कारण प्रगट होते हैं। ऐसे लक्षणों से सम्पूर्ण व्यक्ति बिरले ही होते हैं। परन्तु आवश्यक नहीं कि ऐसे शरीर लक्षण से सम्पन्न व्यक्ति सम्यक् सम्बुद्ध ही हो। ऐसा व्यक्ति गृहस्थ रह कर चक्रवर्ती धर्म-सम्राट् भी हो सकता है और सागर पर्यन्त सम्पूर्ण पृथ्वी का ऐश्वर्य भोग सकता है। परन्तु जिस व्यक्ति ने तीसों पारमिताएं पूरी की हैं वही गृहत्यागी, विवर्त कपाट सम्यक् सम्बुद्ध बनता है।

कल्पों पूर्व तपस्वी ब्राह्मण सुमेध ने भगवान दीपंकर के चरण-मूल में सम्यक् सम्बुद्ध बनने का अधिष्ठान लिया था। भगवान् दीपंकर से आशीर्वाद् पाकर बुद्धाङ्कुर याने बोधिसत्व बना था। तब से अनगिनत जन्मों में आत्महित और परहित के काम में लगा हुआ, तीस पुण्य पारमिताओं को परिपूर्ण कर चुकने पर इस जीवन में यह बत्तीस महापुरुष लक्षण वाला शरीर प्राप्त कर सका। इसे पाकर चक्रवर्ती सम्राट बनने की अपेक्षा सभी पारमिताओं की परिपूर्णता के कारण बोधिवृक्ष के तले सम्यक्सम्बोधि उपलब्ध कर भगवान् गोतम सम्यक् सम्बुद्ध बना। अतः इन शारीरिक लक्षणों से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण उनकी सम्यक् सम्बोधि है जिससे कि वे सम्यक् सम्बुद्ध बने। मानो इसी ओर इंगित करते हुए भगवान् ने आगे कहा –

अभिञ्ञेय्यं अभिञ्ञातं, भावेतब्बं च भावितं।
पहातब्बं पहीनं मे, तस्मा बुद्धोस्मि ब्राह्मण॥

– याने जो अभिज्ञात करने योग्य आश्रव-क्षय परम मुक्त अवस्था है उसका मैंने अभिज्ञान कर लिया, उसे स्वयं अनुभूति पर उतार लिया। जो भावना करने योग्य है उस आर्य मार्ग को मैंने भावित कर लिया याने उसका अभ्यास पूरा कर लिया। जो प्रहाण करने याने त्यागने योग्य है वे राग-द्वेष मैंने पूर्णतया त्याग दिये, उनका प्रहाण कर लिया। इसी कारण मैं बुद्ध हूं।

तत्पश्चात् भगवान् ने कहा –"हे ब्राह्मण! इस जन्म के हित के लिए और भावी जन्म के सुख के लिए तुझे जो पूछना हो सो पूछ।" ब्रह्मायु ब्राह्मण ने भगवान् से पूछा –भो गोतम! कोई व्यक्ति ब्राह्मण, वेदगू, श्रोत्रिय, अरहन्त, केवली, मुनि और बुद्ध कैसे होता है?"

इन शब्दों का अधिकतर व्यवहार जन्म-जाति के आधार पर अथवा कर्मकाण्डों के आधार पर अथवा मिथ्या ढोंग के आधार पर प्रचलित था। भगवान् ने इन शब्दों की गुणवाचक और आध्यात्मिक उपलब्धिवाचक सही व्याख्या की, जिसे सुन कर विद्वान् ब्राह्मण अत्यन्त हर्षित हुआ और श्रद्धा-विभोर होकर अपने उत्तरीय वस्त्र को एक कंधे पर रख सम्मान प्रगट करने लगा। वह भगवान् के चरणों में सिर रख उन्हें चूमने लगा, उन पर हाथ फेरने लगा और उन दिनों की सम्मान-प्रदर्शनीय प्रथा के अनुसार अपना नाम सुनाने लगा – "भो गोतम! मैं ब्रह्मायु ब्राह्मण हूं, भो गोतम! मैं ब्रह्मायु ब्राह्मण हूं।"

यह देख सुन कर वहां की उपस्थित परिषद् अत्यन्त विस्मित हुई, चकित हुई – "अहो! बड़ी अद्भुत है, बड़ी आश्चर्यजनक है श्रमण गोतम की महाऋद्धि, महानुभावता जो कि ब्रह्मायु जैसा जन-प्रसिद्ध यशस्वी ब्राह्मण उनके प्रति इस प्रकार परम नम्रता और आदर भाव प्रगट कर रहा है।"

तब भगवान् ने ब्रह्मायु से कहा –"बस, ब्राह्मण! बहुत हुआ। मैं समझ रहा हूं कि तुम्हें मुझ पर बड़ी श्रद्धा है। अब उठो, अपने आसन पर बैठो।"

जब ब्राह्मण उठ कर आसन पर बैठ गया तो भगवान् ने उसके लिए आनुपूर्वी कथा कही याने उत्तरोत्तर गम्भीर धर्म की क्रमशः व्याख्या की। जैसे दान का महातम्य, शील-सदाचार का महातम्य, स्वर्ग प्राप्त करने के उपाय, काम-वासनाओं के दुष्परिणाम, गृहस्थ जीवन की कठिनाइयां और निष्कामता का महातम्य।

यह सामान्य लोगों के सहज समझ में आ जाने वाली धर्म की साधारण बातें थी जिन्हें क्रमशः एक के बाद एक उपदेशते थे। इसके बाद श्रोता की मनोस्थिति अनुकूल होती तो आगे की अत्यन्त गम्भीर देशना देते थे।

भगवान् ने देखा कि इतना उपदेश सुन कर इस समय ब्रह्मायु ब्राह्मण का चित्त अत्यन्त भव्य है, मृदु है, नीवरण रहित है,

आह्लादित है, श्रद्धालु है, प्रसन्न है। तब उसे आगे का वह गम्भीर उपदेश दिया जो कि सभी बुद्धों का स्वानुभूति पर उतारा हुआ परम ज्ञान होता है। जैसे दुःख, समुदय, निरोध और मार्ग।

नाम और रूप तथा मन सहित छहों इन्द्रियों का सारा क्षेत्र अनित्य है। इसी कारण यह दुःख का क्षेत्र है। दुःख इसलिए कि अज्ञानवश इस अनित्य के प्रति मैं, मेरा और मेरी आत्मा का भाव पैदा कर लेने से इससे तादात्म्य स्थापित हो जाता है और परिणामतः इसके प्रति तृष्णा [राग-द्वेष] का सृजन होने लगता है। इसे दूर करने के लिए शील-समाधि-प्रज्ञा का आर्य-मार्ग भावित करना पड़ता है। इससे तृष्णा का क्षय हो जाता है और निरोध अवस्था याने नित्य, शाश्वत, ध्रुव निर्वाण का साक्षात्कार हो जाता है।

ब्रह्मायु ब्राह्मण पूर्व जन्म में अर्जित की हुई पुण्य पारमिताओं का धनी था। तभी तो भगवान् बुद्ध और उनकी धर्म देशना के सम्पर्क में आ सका। इसलिए जैसे कि सी मैले वस्त्र की अपेक्षा धुला हुआ स्वच्छ वस्त्र रंग जल्दी और साफ पकड़ लेता है, वैसे ही भगवान् की यह देशना सुनते-सुनते, उसी आसन पर बैठे-बैठे उसके विरज, विमल धर्म-चक्षु उत्पन्न हुए। उसने अपने भीतर उदय-व्यय की अनित्यता का अनुभव करते हुए उस कल्याणी अवस्था का साक्षात्कार किया जहां उसने देखा कि सम्पूर्ण नाम-रूप का क्षेत्र, सम्पूर्ण इन्द्रियों का क्षेत्र जो सचमुच समुदय स्वभाववाला है वह सब किस प्रकार निरुद्ध हो गया। उसके परे की नित्य, ध्रुव, अमृत अवस्था का साक्षात्कार हो गया। तभी स्वानुभूति के स्तर पर यह ज्ञान जागा –

यं किञ्चि समुदय धम्मं, सब्बं तं निरोध धम्मंति ।

इस प्रकार ब्रह्मायु ब्राह्मण को अनुभूति द्वारा धर्म संदृष्ट हुआ, प्राप्त हुआ, विदित हुआ और परिणामतः प्रगाढ हुआ। बुद्धि द्वारा छिछले-छिछले स्तर पर समझ में आने वाला न रह कर अब अनुभूति द्वारा सघन हो गया। अब ब्रह्मायु शंकाओं से पूर्णतया विमुक्त हो गया। मिथ्या ऊहापोह से विरत हो गया। वैशारद्य प्राप्त कर निर्भय हो गया। अनार्य से आर्य हो गया।

ब्रह्मायु ब्राह्मण गृही जीवन में रहते हुए ही मृत्यु के पूर्व अनागामी अवस्था को प्राप्त हुआ। ब्रह्मायु सचमुच धन्य हुआ! उसका मंगल सधा! कल्याण सधा!

आओ, साधकों! हम भी अपना कल्याण साधें।

कल्याणमित्र,

स. ना. गो.